गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

कुलार्णवतन्त्र से एक श्लोक

कुलार्णवतन्त्र, श्लोक ६४

यथा घटश्च कलशः कुम्भश्चैकार्थवाचकः।
तथा देवश्च मन्त्रश्च गुरुश्चैकार्थ उच्यते॥

जिस प्रकार घड़ा, कलश व कुम्भ, ये सब एक ही वस्तु के नाम हैं,
उसी प्रकार देव, मन्त्र व गुरु भी एक ही सारतत्त्व को दर्शाते हैं।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर : © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।